ISSN:2583-8849



वसंत जमशेदपुरी
जमशेदपुर, झारखंड -831012
पैतृक ठिकाना : सीकर, राजस्थान

अच्छा लगता है

सुबह-सुबह कोयल का गाना,अच्छा लगता है।
प्रियजन से मिलना-बतियाना,अच्छा लगता है॥

रजनीगंधा, जुही, चमेली, शेफाली महके।
उपवन में भँवरों का आना, अच्छा लगता है॥

उसकी गलियों में गुल चुनना, कौन नहीं चाहे।
दामन में खुशबू भर लाना,अच्छा लगता है॥

कलियों-सा मुस्काना उसका,शहदीली बातें।
बात-बात पर खिल-खिल जाना अच्छा लगता है
॥

आँखों में मधु की मादकता,रूप सुराही-सा।
यौवन की मदिरा छलकाना,अच्छा लगता है॥

करे इशारे रह-रह मुझको,चूड़ी की खन-खन।
नजर मिला कर नजर चुराना,अच्छा लगता है॥

मन में लड्डू फूटें फिर भी,होठों पर ताले।
पलकें नीची कर शरमाना,अच्छा लगता है॥

हर अँधेरी वीथिका को

हर अँधेरी वीथिका को जगमगाना चाहता हूँ।
गीत कोई प्रीति का मैं गुनगुनाना चाहता हूँ॥

प्रीति हो तो राधिका-सी कुछ न चाहा श्याम से।
प्रीति की यह रीति ही सबको सिखाना चाहता हूँ॥

दूर तुम मुझसे रहो स्वीकार यह मुझको नहीं।
जिस तरह भी हो जुगत मैं पास आना चाहता हूँ॥

पुष्प की नगरी सुसज्जित बीच में हो घर हमारा।
है यही सपना जिसे तुमको बताना चाहता हूँ॥

हो अगर सूरत मनोहर देवबाला-सी सुगढ़ हो।
झील-से उसके नयन में डूब जाना चाहता हूँ॥

चंद्रिका की यामिनी में मेघ छलकाए अमिय-रस।
थाम कर बाँहे तुम्हारी मैं नहाना चाहता हूँ॥

हो नहीं कुछ लोभ,हिंसा या तनिक विद्वेष ही हो।
एक ऐसा ही जगत् सुनलो बसाना चाहता हूँ॥

*